

दिनांक 3 सितम्बर, 1985

सं० ओ०वि०/एफ०-ड०/११-८५/३५९३३.—चूंकि हरियाणा के राजपाल की राय है कि मै० संक्षिप्ती इन्जीनियरिंग प्रा० लि०, प्लाट न० ७०, सेक्टर ६, फरीदाबाद, के श्रमिक श्री भोगी मंडल तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई औद्योगिक विवाद है;

और चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब, ग्रौद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई प्रक्रियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० 5415-3-श्रम-68/5254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़त हुए अधिसूचना सं० 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उक्त अधिसूचना की धारा 7 के अधीन गठित श्रग न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उस से सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनीय एवं पंचाट तीन भास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है, या विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है :—

० वया श्री भोगी मंडल की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं० ग्रो०वि०/एफ०डी०/91-85/35940.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै० सांकेतिक विधि प्रा० लि०, प्लाट नं० 70, सेक्टर 6, फरीदाबाद, के श्रमिक श्री श्री राम तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रौद्धोगिक विवाद है;

और चंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० 5415-3-श्रम- 68/5254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं० 11495-जी०-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिसूचना की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, करीदबाद, को विवादप्रस्ताव या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादप्रस्ताव मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित भामला है:—

क्या श्री श्री राम की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

सं० ओ०वि०/एफ०डी०/91-85/35947.—चूंकि इरियाणा के राजमपाल की राय है कि मैं सांकेतिक विवाह के अनुसुद्ध प्रसाद तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई धौत्योगिक विवाह है;

और चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विदाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करमा वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब, श्रीधोगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के दण्ड (३) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/5254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं. 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिसूचना की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादप्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित तीव्र लिखा मामला न्यायनियम एवं पंचाट तीन मास में बने हेतु निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिकके बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या विवाद से संसंगत अधिकारी सम्बन्धित मामला है :—

यथा श्री ग्रन्थद्वारा प्रसाद की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

सं. ग्रोविं/एक०डी०/91-85/35954.—जूकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं सकम्भरी इन्जीनियरिंग, प्रा० लि०, प्लाट नं० 70, सबटर 6, फरीदाबाद, के अधिक श्री राज धारी तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रोवोगिक विवाद है;

ग्रौंड चंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिये, अब, ग्रीष्मोगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उप-धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये, हरियाणा के राज्यगाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. ५४१५-३-थम-६८/५२५४, दिनांक २० जून, १९६८ के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं. ११४९५-जी-श्रम ६७/११२४५, दिनांक ७ फरवरी, १९५८, द्वारा उक्त अधिनियम की धारा ७ के अधीन गठित श्रम व्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला व्यायानीय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से संसागत अथवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री राज धारी को सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हुक्मदार है?